12 अक्टूबर

(17) हेतौ -

वृत्ति - "हेत्वर्थे तृतीया स्यात्। द्रव्यादिसाधारणं निर्व्यापारसाधारणं च हेतुत्वम्। कारणत्वं तु क्रियामात्रविषयव्यापार नियतं च। दण्डेन घटः। पुण्येन दृष्टो हरिः। फलमपीह हेतुः - अध्ययनेन वसति।"
(फलम् अपि इह हेतुः)

उदाहरण - (क) दण्डेन घटः। (डंडे से घड़ा)।

(ख) पुण्येन दृष्टो हरिः। (पुण्य से हरि को देखा)।

(ग) अध्ययनेन वसति। (अध्ययन के लिए रहता है।)
=गौण)

हेतु के अनभिहित (साक्षाद् अनुक्त) होने पर हेतुवाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है। हेतु का अर्थ है कारण। फलसाधन के योग्य (समर्थ) को हेतु कहा जाता है। हेतु और करण में अन्तर होता है। (1) हेतु द्रव्य, गुण तथा कर्म इन तीनों को सिद्ध करता है, साधता है। साथ ही हेतु क्रियाहीन (व्यापार रहित) तथा क्रियायुक्त (सव्यापार) दो प्रकार का होता है।

(2) करण कारक है। करण मात्र क्रिया को साधता है, सिद्ध करता है। यह केवल क्रियायुक्त व्यापार है।

(क) दण्डेन घटः (= डंडे से घड़ा)।

द्रव्य के प्रति हेतु का उदाहरण - यहाँ घट (घड़े) के बनने में दण्ड (डंडा) हेतु है। दण्ड (डंडा) द्रव्य है। यह डंडा क्रियाशील होकर चाक को घुमाता है। अतएव दण्ड () में तृतीया विभक्ति हुई।

(ख) पुण्येन हरिः दृष्टः (= पुण्य से हरि को देखा)।

13 अक्टूबर

हेतौ सूत्र की व्याख्या

(अ) क्रिया के प्रति हेतु का उदाहरण → पुण्येन हरिः दृष्टः।

यहाँ पर 'देखना' क्रिया का हेतु (कारण) पुण्य है। पुण्य अमूर्त (= निराकार) होने से क्रियाहीन व्यापार है। इसकारण कारण/हेतु को अभिव्यक्त करने वाले शब्द 'पुण्य' में तृतीया हुई। पुण्य क्रियाहीन व्यापार है। अतएव यह करण नहीं हो सकता।

जो क्रिया के पूर्व (पहले) रहता है वह हेतु होता है। जो क्रिया के पश्चात (बाद) होता है वह फल होता है। उपर्युक्त वाक्य में देखना क्रिया है, उससे पूर्व 'पुण्य' रहता है।

इस सूत्र 'हेतौ' के मत में फल भी हेतु में समाहित (मिल) हो जाता है। हेतु से 'फल' अर्थ भी अङ्गीकार करने पर (ग) अध्ययनेन वसति [= अध्ययन (पढ़ाई) के लिये रहता है] में 'अध्ययन' शब्द से तृतीया हुई है। यहाँ पहले रहने की क्रिया है, इसके बाद फलरूप में 'अध्ययन' होता है। इसप्रकार अध्ययन वास क्रिया (रहना) का फल है।

इसका क्या फल होगा। इस ज्ञान के बिना कार्य में प्रवृत्ति नहीं होती। इसप्रकार फल भी अपने ज्ञान द्वारा इष्ट (वाँछित) साधन होता है। अतएव अध्ययन फल का हेतु के रूप में ग्रहण होने से तृतीया विभक्ति हुई।

फल का हेतु होना भी वक्ता की इच्छा पर निर्भर है। वक्ता जब हेतु के रूप में फल को नहीं कहना चाहता, तब "अध्ययनाय वसति" वाक्य में अध्ययन में चतुर्थी विभक्ति आती है। यहाँ अध्ययन का फल होना मुख्य रूप से वाँछित है।